Purva Mimaansa
A Multi-disciplinary Bi-annual Research Journal
(Referred Peer Reviewed)

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

प्रागैतिहासिक क्षेत्र मीरजापुर के चित्रित शैलाश्रय : मदनपुरा के विशेष संदर्भ मे

अभिनव तिवारी[1]

शोध सार : कला के माध्यम से प्राचीन काल से ही मनुष्य अपने अव्यक्त भावों को चित्रों के रूप में व्यक्त करता रहा है। कुछ भावों को वह बुद्धि के विकास के आधार पर सोच–समझ कर और कुछ भावों को वह अचानक से व्यक्त करता था। इसी प्रकार से मदनपुरा के शैलचित्रों को भी प्राचीन मानव अपने अव्यक्त भावों को शैलचित्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र में मदनपुरा के शैलचित्रों की व्याख्या की गई है।

प्रमुख शब्द : विंध्याचल, मीरजापुर, मदनपुरा, प्रागैतिहासिक शैलचित्र

प्रस्तावना : मदनपुरा, विन्ध्य पर्वत में स्थित विंध्याचल मण्डल के मीरजापुर जनपद में जिला मुख्यालय मीरजापुर से 15 किमी० दक्षिण–पूर्व दिशा में मदनपुरा नामक ग्राम (25.0267082, 82.5573406) में समुद्रतल से 400 मीटर ऊंचाई पर स्थित एक छोटा सा गाँव है। गाँव के बाहरी भाग में पहाड़ी के दक्षिणी ढाल पर यह चित्रित शैलाश्रय स्थित है। जिसे 'मदनपुरा का चित्रित शैलाश्रय' कहा जाता है। चट्टानों के खिसक जाने से शैलाश्रय अब अपने मूल स्वरूप में नही है। शैलाश्रय के वाम पार्श्व में एक बड़ी शिला दक्षिणमुखी सीधी खड़ी है। वर्षा एवं धूप का सीधा प्रभाव इस शिला पर नही पड़ पाया, अतः इस शिला पर अंकित चित्र अपेक्षाकृत सुरक्षित हैं, जबकि शैलाश्रय के अन्य भागों में अंकित चित्र अत्यंत क्षीण व अस्पष्ट हैं।

प्रागैतिहासिक अवस्था में मानव की मुख्य गतिविधियाँ भोजन संग्रह के विभिन्न प्रयत्नों तक सीमित थी। इसके अतिरिक्त इस युग में उसकी एक चिंता हिंसक पशुओं से आत्मरक्षा की भी थी। आखेट इन दोनों का समाधान था। अतः इस काल में मानव जीवन के मुख्य संघर्ष की अभिव्यक्ति जब चित्रकला में हुई तो यह स्वाभाविक ही था की आखेट के दृश्यों का विशेष आलेख हो, उसके पश्चात् अन्य क्रिया–कलाप जैसे नृत्य–उत्सव इत्यादि।

---

[1] शोध, छात्र, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Purva Mimaansa
A Multi-disciplinary Bi-annual Research Journal
(Referred Peer Reviewed)

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

मानव विकास की जिस आदिम सांस्कृतिक अवस्था से कला का उद्‌भव माना जाता है, वह अवस्था आखेट है। जिस सापेक्ष बौद्धिक श्रेष्ठता ने उसे पाषाण उपकारणों के निर्माण कौशल द्वारा पशुओं पर अधिपत्य प्रदान किया, उसी की अभिव्यक्ति रचनात्मक अनुभूति के क्षेत्र में चित्रकला के रूप में हुई। भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रों में प्राप्त बहुसंख्यक आखेट अवस्था से ही चित्रण का आरम्भ हुआ और उसके पश्चात् अन्य क्रिया–कलाप जैसे नृत्य–उत्सव इत्यादि। यहाँ के चित्रकारों की पुरातन पीढ़ी आखेटकों एवं नृत्य की ही थी। मीरजापुर के बहुसंख्यक प्रागैतिहासिक शैलचित्रों (जिनकी विषयवस्तु नृत्य है) की भांति मदनपुरा शैलाश्रय के चित्रों की विषय वास्तु भी नृत्य के दृश्यों से सम्बंधित है। इस काल में मानव के क्रिया–कलाप आखेट अथवा भोजन–संग्रह तक ही सीमित थे, उसका कोई स्थाई निवास नही था। संभवतया भौतिक संसार से परे अन्य किसी वास्तु तक उसका दृष्टिकोण जाना संभव नही था। कला उसके लिए अपनी शिकारी प्रवृत्ति का अंग बन गयी थी। आखेट उनके जीवन का प्रमुख अंग था एवं अन्य कार्य द्वितीयक तथा जीवन से संबध इस प्रक्रिया को उन्होंने अपने निवास स्थानों अथवा शैलाश्रयों में चित्रित किया। निवास स्थल में स्थाई या अस्थाई निवास करते हुए ही उन्होंने शैलचित्रों का आलेखन किया होगा। ऐसे दृश्य भारत में विश्व के लगभग अनेक स्थलों से प्राप्त हुए हैं।

साहित्यिक समीक्षा : फ्रांस और स्पेन में जब प्रागैतिहासिक चित्र का पता चला और वह प्रकाश में आये तो उसके पश्चात् भारत में भी प्रागैतिहासिक कलाकृतियों/शैलचीतों पर विद्वानों ने भी ध्यान केन्द्रित करना प्रारम्भ किया और विशेषतः शैल चित्रों पर भी परिचर्चा का विषय बन गया। मीरजापुर में शैल चित्रों के खोज का श्रेय कार्लाईल और काकबर्न को जाता है। कार्लाईल ने 1880 में सर्वप्रथम मीरजापुर के निकट कैमूर की पहाड़ियों पर शैलचित्रों को देखा था, जो गुहचित्रों के रूप में विद्यमान थे परन्तु वह उसके विवरण को प्रकाशित नही कराये। तत्पश्चात काकबर्न ने इन चित्रों को जब देखा तो 1883 में इनका सचित्र विवरण 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' के जर्नल में प्रकाशित किया। 1909 में 'इम्पीरियल गजेटियर' द्वारा इन शैलचित्रों की पुनः समीक्षा की गई। 'डी०एल० ड्रेक' द्वारा 1911 के गजेटियर में पंचम अध्याय के अंतर्गत इतिहास का परिचय देते हुए वहां के शैलचित्रित गुहाओं को मानव निवास का सर्वप्राचीन निवास स्थल बतलाया है। तत्पश्चात मनोरंजन घोष ने नवीन

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

प्रागैतिहासिक शैलचित्रों का पता लगाया, जिनमें लिखनिया दरी था। गार्डन चाईल्ड 1880–1932 के मध्य मीरजापुर और बांदा के शैलचित्रों पर काम किया और उनके विवरणों को प्रकाशित किया। जगदीश चन्द्र गुप्त ने 1958 में 'आजकल' के अंक में 'भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रकला : एक परिचय' में भी मीरजापुर के शैलचित्रों के विषय में विवरण दिया। डॉ राधाकांत वर्मा ने प्रथम बार मीरजापुर क्षेत्र के प्रागैतिहासिक चित्रों का पाषाण कालीन संस्कृतियों पर क्या प्रभाव पड़ा, उक्त सन्दर्भ को अपने शोध प्रबंध में सचित्र दर्शाया है। तत्पश्चात जगदीश गुप्त ने 1967 में अपने पुस्तक 'प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला' में मीरजापुर के अनेक शैलचित्रों का विवरण दिया। यशोधर मठपाल, मिश्रा, और राकेश तिवारी (पूर्व महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व संस्थान,नई दिल्ली) द्वारा भी अनेक शैलचित्रों की खोज की गयी और उनका विवरण प्रकाशित किया गया है। वर्तमान में भी शोधकर्ताओं एवं विद्वानों द्वारा मीरजापुर में पुरातात्विक खोजें की जा रही है परन्तु यह अभी अप्रकाशित है।

शोध प्रक्रिया Research Methodology

1.ग्राम स्तरीय सर्वेक्षण – शोधार्थी को ग्राम स्तरीय सर्वेक्षण के दौरान ही मदनपुरा के शैलचित्र के विषय में पता चला।

2.शोध का महत्व – मदनपुरा के शैल चित्रों के अध्ययन से जनपद के शैलचित्रों के माध्यम से पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक आधार पर जनपद का एक नवीन इतिहास लिखने का प्रयास किया गया है।

3.शोध की आवश्यकता – सभ्यता एवं संस्कृतियों से सम्बंधित नवीन तथ्य को हम पुरातात्विक शोधों के द्वारा प्रकाश में लाते हैं। तथ्यों के विश्लेषण से प्राचीन इतिहास को हम क्रमबद्ध और तथ्यपरक ढंग सेलिखने में मदद मिलती रहती है। पुरातत्व के अंतर्गत कलाकृतियों का मूल्यांकन उसकी कलात्मक विशिष्टताओं के आधार पर नही होता अपितु सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन किया जाता है।

4.शोध समस्या – मदनपुरा के शैलचित्रों के आधार पर उसका विश्लेषण करना और तिथिक्रम को प्रस्तुत करना एक कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य है।

5.परिकल्पना – मदनुरा के शैलचित्रों के विविध पक्षों का विस्तृत विश्लेषण करना।

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

– उनके तिथिक्रम को ज्ञात करना, तुलनात्मक आधार पर।

– व्यवस्थित पुरातात्विक सर्वेक्षण से प्रकाश में आयी पुरासंस्कृतियों, पुरस्थलों एवं पुरावशेषों के आधार पर मदनपुरा के क्रमबद्ध इतिहास को प्रकाश में लाना।

6शोध प्रविधि – प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विषय की अपनी अलग–अलग शोध प्रविधियां होती हैं, जिन्हें एतिहासिक और पुरातात्विक शोध प्रविधियां कहा जाता है। इनका प्रयोग शोध समस्या के आवश्यकतानुसार किया जाता है। मदनपुरा के शैलचित्र के लिए सर्वेक्षणात्मक प्राविधि का प्रयोग किया गया है।

7शोध उपकरण – पेन,पेन्सिल,रबड़, स्केल, इंचीटेप, कैमरा, टोपोसीट, मानचित्र, टोर्च, पिन, कम्पास, इत्यादि

नमूना संग्रह विधि – नमूना संग्रह सिर्फ फोटोग्राफी और विडिओ रिकार्डिंग द्वारा ही किया गया है।

साक्षात्कार – ग्रामीणों का साक्षात्कार लिया गया, जिनसे इस शैल चित्र के सम्बन्ध में अनेक लोक कहानियां पता चली परन्तु वह सब असत्य प्रतीत हुई।

शोध का उद्देश्य – शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत प्रागैतिहासिक शैलचित्र अभी तक किसी भी विद्वानों द्वारा प्रकाश में नही लाया जा सका। अतः शोधार्थी द्वारा इस नवीन प्रागैतिहासिक शैलचित्र का चयन अपने शोधपत्र के लिए किया गया है।

पठारी क्षेत्र के ये शैलाश्रय प्रागैतिहासिक मानव के लिए उपयुक्त स्थल बन गये थे। इन्ही के अन्दर निवास करते हुए उसने विभिन्न मौसमी प्रत्यावर्तनों से जूझने की शक्ति अर्जित की। मदनपुरा का शैलाश्रय अपने मूल स्वरुप में काफी विशाल रहा होगा । वर्तमान में शैलाश्रय की ऊंचाई 04–05 मीटर तथा लम्बाई 07 मीटर के लगभग है।

शैलाश्रय का काफी बड़ा भाग चित्रित था। सूर्य,प्रकाश,वायु,वर्षा की बौछारों को झेलते–झेलते अधिकतम चित्र नष्ट हो चुके हैं या जो बचे हुए हैं वह पहचान योग्य नही है। शैलाश्रय के एक शिलापटल (4X3 मीटर) पर चित्रित आखेट दृश्य किसी सीमा तक सुरक्षित है। इसके सुरक्षित रह पाने का एक प्रमुख कारण धूप एवं वर्षा की बौछारें सीधी इस शिलापटल पर नही पड़ पाई। दूसरा, चित्रित शिलापटल की सतह छिद्रित है। छिद्रों में रंग भर जाने के कारण ये चित्र स्वतः यथास्थान जम गये।

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

चित्रण में लाल खुनी रंग का प्रयोग किया गया है। आकृतियाँ रंगों से भरी हुई हैं किन्तु रंगों द्वारा काया को भरने की चेष्टा में रंगों का अनावश्यक बहाव या छीटें पूर्णतः अज्ञात है। इससे चित्रकारों की कुशलता स्पष्टतः सिद्ध है।

शैलाश्रय के चित्रित दृश्यों में पशुओं और मानवों के समूह हैं। रेखाओं द्वारा चित्रित पशुओं और मानवों के समूह हैं। रेखाओं द्वारा चित्रित मानवाकृतियों को किसी समारोह में नृत्य करते हुए या उत्सव मानते हुए प्रदर्शित किया गया है। पशुओं को मानव समूहों के साथ ही प्रदर्शित किया गया है। मानव आकृतिओं के समूह संयोजनों में बांयी ओर, नीचे की ओर, एवं दाहिनी ओर के भागो में चित्रित किये गये हैं। प्रस्तुत चित्र में कुछ 13 मानव एवं 02 स्त्री आकृतियाँ स्पष्ट है, अन्य आकृतियों के चित्रित पहचान योग्य नही हैं। अन्य आकृतियों के हाथ या तो नीचे फैले हुए और पैरों के घुटने मुड़े हुए, जिससे चित्रित आकृतिओं को देखकर उनके समारोह में नृत्यरत अवस्था का ज्ञान प्राप्त होता है। सभी चित्रित आकृतिओं में उनके गर्दन बाएं से दाहिने ओर मुड़े हुए प्रदर्शित है, सभी मनुष्य अपने बायीं तरह देखते हुए दिख रहे हैं।

पुरे दृश्य में एक उल्लेखनीय तथ्य यह है की दोनों पार्श्वों में स्थित मनुष्य आकृतियों को अन्य आकृ तियों की अपेक्षा वृहद् आकार में चित्रित किया गया है।

मदनपुरा शैलाश्रय के नृत्यरत दृश्य की भांति आयताकार एवं रेखांकृत देहवाली आकृतियाँ मीरजापुर के अन्य क्षेत्रों में भी प्रचुर मात्रा में मिलती है। नृत्यरत चित्रण स्वाभाविक मुद्राओं के साथ हुआ है। प्रस्तुत शैलचित्र में मुख, हाथ, पैर, शारीरिक संरचनाओं की बनावट स्पष्टतः किया गया है। विविध भाव–भंगिमाओं के अनुरूप सशक्त विन्यास दिखाई देता है । आदिम कला का नमूना होने पर भी वे सप्रमाण दिखाई देती है।

भारतवर्ष में अनेक स्थलों से विद्वानों द्वारा शैलचित्रों की खोज किया गया फिर उन्हें अपने लेखों के माध्यम से प्रकाश में लाया गया। उत्तराखण्ड में (भट्ट 1996–97 : 29–34, अग्रवाल और जोशी : 1978, मठपाल : 1977), बिहार में (पन्त : 1977, वाकाणकर : 1976), मध्यप्रदेश में (वाकाणकर एवं ब्रुक 1976 : 34–60 एवं 96–103, मिश्रा : 1977, काकबर्न : 1803) उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, केरल, और उत्तर प्रदेश में (काकबर्न : 1883, 1899, तिवारी : 1980) आदि से अनेक शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

प्रस्तुत लेख मीरजापुर जिले के शैलाश्रयों में चित्रित नृत्य दृश्यों पर विचार किया जा रहा है। मीरजापुर जनपद के पूर्व चंदौली, उत्तर–पूर्व में वाराणसी, पश्चिम में इलाहाबाद, उत्तर में भदोही, दक्षिण में सोनभद्र, जनपद स्थित है। जनपद के मध्य में गंगा नदी प्रवाहित होती है और किनारों पर विन्ध्याचल पर्वत का पठारी मैदान है। मीरजापुर के विस्तृत पठारी भू–भाग में बलुआ पत्थर के सहस्त्रों छोटे–बड़े आश्रय प्राप्त होते हैं। जिनमे लगभग अनेक चित्रित शैलाश्रय प्रकाश में आ चुके हैं। जिनके ऊपर विद्वानों (तिवारी : 1980, 1982, एलिमेन : 1957, सांकलिया : 1974, गुप्त : 1967) ने अपने लेख प्रस्तुत कर उन्हें प्रकाश में लाये। विन्ध्य क्षेत्र की परम्परा के अनुरूप पठार और छिछली वनाच्छादित घाटियों में चित्रित शैलाश्रय प्राप्त होते हैं।

प्राचीन शैलचित्र सर्वाधिक संख्या में उत्तर भारत में ही प्राप्त हुए हैं। इसमें बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश एवं दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश, कर्णाटक, केरल, आदि से प्राप्त हुए हैं। उत्तर भारत के अधिकांश चित्रित शैलाश्रय विन्ध्य पर्वत श्रृंखला के विभिन्न स्थलों से ज्ञात हुए और उन पर विद्वानों के लेख प्रस्तुत किये गये हैं। अन्य स्थलों में सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला क्षेत्र है।

जहां तक चित्रों की प्राचीनता का प्रश्न है, वह कई तथ्यों से स्पष्ट है। अधिकांश चित्र धुंधले और खंडित हो चुके हैं। जो चित्रों की प्राचीनता को ही सिद्ध करते हैं। चित्रों की विषयवस्तु भी इसके प्रागैतिहासिक होने का प्रमाण है, क्योंकि सभी प्रागैतिहासिक चित्रों में यायावरीय की आखेट जीवन, नृत्यरत अवस्था की ही प्रकृति दिखाई देती है, खाद्य उत्पादक संस्कृति की नही। विषयवस्तु एवं रूपायन के आधार पर मदनपुरा के नृत्यरत दृश्य की तुलना देश के अन्य भागों (विशेषतः भीमबेटका) से प्राप्त प्रमुख प्रागैतिहासिक चित्रों से की जा सकती है।

यह प्रागैतिहासिक शैलचित्र प्रागैतिहासिक मानवों की जीवन्त कहानी को प्रदर्शित करती हैं। जिनको गहनतापूर्वक अध्ययन से तात्कालिन मानव समाज के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक क्रिया–कलापों की जानकारी प्राप्त किया जा सकता है।

वाकणकर ने भारतीय शैलचित्रों के कालक्रम का निर्धारण करते हुए उन्हें पांच कालों तथा बीस शैलियों में विभाजित किया है। प्रथम काल, जो की मध्य पाषाणकाल से सम्बद्ध है, क्रमशः 1–6 शैलियों या स्तरों में चित्रित है। मदनपुरा के चित्रों को विषयवस्तु एवं आलेखन शैली के आधार पर

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

वाकणकर द्वारा उल्लिखित प्रथम काल के तृतीय स्तर में रखा जा सकता है। इसी स्तर में उन्होंने मानव आकृतिओं व आखेट दृश्यों के चित्रण का प्रारम्भ माना है। इसी तरह राकेश तिवारी ने मीरजापुर के विभिन्न क्षेत्रों से नृत्यरत शैलचित्रों को प्रकाश में लाये और उनका काल निर्धारण करते हुए 7000 ई०पू० बतलाया है। इसी तरह मदनपुरा का चित्रित शैलचित्र, मीरजापुर के विभिन्न शैलचित्रों से साम्यता रखता हुआ प्रतीत होता है। इसमें मदनपुरा के समान पतली बाह्य रेखाओं से चित्रित हैं तथा आकृतियाँ पूर्ण तथा देहवाली मिलती है। इसी तरह मठपाल ने भी भीमबेटका के शैलचित्रों का काल निर्धारण करते हुए उन्हें प्रागैतिहासिक से लेकर ऐतिहासिक काल में विभक्त किया है।

तिथिक्रम इस प्रकार मदनपुरा के शैलचित्रों की विषयवास्तु, रूपायन, देश के अन्य भागों से प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्रों का अत्यधिक धुंधलापन आदि प्रमुख लक्षणों के आधार पर इन्हें मध्य पाषाण कालीन कहा जा सकता है। जिनकी तिथि 7000 ई०पू० माना जा सकता है।

सुझाव

इस प्रकार उक्त शोध कार्य के प्रति शोधार्थी द्वारा भविष्य हेतु कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

- उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जनपद के सभी शैल चित्रों का भारत सरकार एवं पुरातत्व विभाग द्वारा इनके संरक्षण हेतु कार्य किया जाना चाहिए । जिससे उनको संरक्षित करने से यह बहुमूल्य धरोहरों को हम अगली पीढ़ी तक मूल रूप से हस्तगत किया जा सके।

सन्दर्भ

1. भट्ट, आर०सी० 1996–97 "डुंगी का चित्रित शैलाश्रय", प्राग्धारा–07, उ०प्र०रा०पु०सं०, लखनऊ, पृ०– 29–34.

2. अग्रवाल,डी०पी० और जोशी, एस०सी० 1978 " रॉक पेंटिंग्स इन कुमाऊँ, नोट्स एंड न्यूज, मैंन एंड एनवायरमेंट, वोल्यूम–2, प्रीहिस्टोरिक एंड क्वाटरनरी स्टडीज द्वारा फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरीज, अहमदाबाद.

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

3. मठपाल,यशोधर, 1977 "प्रीहिस्टोरिक आर्ट ऑफ भीमबेटका, भीमबेटका : प्रीहिस्टोरिक मैन एंड हिज आर्ट इन सेंट्रल इंडिया, डेक्कन कॉलेज, पूना.

4. पन्त, पी०सी०, 1977 "दी पैलियोलिथिक इन्द्रसट्रीज ऑफ सावुदर्न यू०पी० (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, बी०एच०यू०).

5. वाकाणकर,वी०एस०, 1976 "अध्यक्षीय भाषण, इंडियन सोसाईटी फॉर प्रीहिस्टोरिक एंड क्वाटरनरी स्टडीज, जयपुर.

6. वाकाणकर,वी०एस० एवं ब्रूक, आर०आर०, 1976 "स्टोन एज पेंटिंग इन इंडिया", डी० पी० तारापोरवाला संस एंड कम्पनी, पृ०– 34–60 एवं 96–103.

7. मिश्रा,वी०डी०, 1977 "सम एस्पेक्ट्स ऑफ इंडियन आर्कियोलोजि, प्रभात प्रकाशन, इलाहाबाद.

8. काकबर्न, 1803 अ "आन दी रीसेंट एक्जिसस्टेंस ऑफ रायीनोसोरस, इन दी नार्थ–वेस्ट प्राविन्स एंड ए डीस्क्रिप्स्न्स ऑफ आर्काईव रॉक पेंटिंग्स फ्रॉम मीरजापुर, रिप्रजेंटिंग्स ऑफ दी एनिमल, जर्नल ऑफ दी रायल सोसायिटी, एल–पप य नं० 1.

9. काकबर्न, 1883 ब "ए शोर्ट एकाउंट ऑफ दी पेट्रोग्राम इन दी केव्स एंड रॉक शेल्टर्स ऑफ दी कैमूर रेंज इन मीरजापुर, प्रोसीडिंग्स दी एसीआटिक ऑफ बंगाल.

10. काकबर्न, 1899 "केव ड्राईन्न्स इन कैमूर रेंज, जर्नल ऑफ रायल एसीआटिक सोसाईटी.

11. तिवारी,राकेश, 1980 "खोहों में खोया अतीत", धर्मयुग 6–12 जुलाई.

12. तिवारी,राकेश, 1980 "प्रतिक्रिया, छायानट, जनवरी–मार्च अंक–12, उ०प्र०संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ.

13. तिवारी,राकेश, 1982 "थिरकते शैलचित्र", उ०प्र०,रा०,पु०,सं०, लखनऊ.

14. एलिमेन, एस, 1957 "दी प्रीहिस्ट्री ऑफ अफ्रीका, हकिंसन एंड क० लि०, लन्दन.

15. सांकलिया,एस०डी०, 1974 "प्रीहिस्ट्री एंड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान, डेक्कन कालेज, पूना.

16. गुप्त,जगदीश, 1967 "प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.

Purva Mimaansa
A Multi-disciplinary Bi-annual Research Journal
(Referred Peer Reviewed)

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

मानचित्र साभार गूगल

चित्र : स्वतः शोधार्थी द्वारा